गडहिंग्लज

नवंबर १९९२

प्रमाण - पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि सुश्री प्रेमा गाडवीजी ने एम्. फिल्. उपाधि के हेतु "सारिका" (१९८९) में प्रकाशित कहानियों में नारी - चित्रण" विषय पर मेरे निर्देशन में काम किया है। आपकी शोध पद्धति एवं लेखन - विधि से मैं आद्योपांत परिचित हूँ।

मेरी संस्तुति है कि प्रस्तुत प्रबंधिका एम्. फिल्. उपाधि के हेतु प्रस्तुत की जाए।

[डॉ. सुधाकर गोकाकर]

डॉ. सुधाकर गोकाकर,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवराज महाविद्यालय,
गडहिंग्लज - ४१६५०२
[जि.कोल्हापुर - महाराष्ट्र राज्य]

कु. प्रेमा विश्वनाथ गाडवी

: : प्राक्कथन : :

विषय - चयन का उद्देश्य :-

प्रत्येक युग अपनी समस्याओं को लेकर जन्म लेता है। युग अपनी विशेष मानसिकता से युक्त रहता है। अत: समस्या के प्राचीन प्रतीत होने पर भी उसके स्वरूप और उसकी अभिव्यक्ति में अंतर आता ही है। यही कारण है कि पूर्वरचित विषय पर युग - विशेष में रचित कृति भी नवीनता लिए रहती है। दूसरे, घटना - विशेष पर लिखी हुई रचना रचना - काल की परिस्थितियों की प्रतिक्रियाओ से युक्त होती है। युगीन प्रतिक्रियाओं के परिप्रेक्ष्य में समस्याओं - नारी समस्याओं को पकड़ने का प्रयास आलोच्य - विषय के माध्यम से किया है। कहानी - विधा में ये प्रतिक्रियाएँ जितनी ताजा और तीव्र अभिव्यक्त हो सकती है, संभवत: और किसी विधा में नहीं।

कहानी विधा ही क्यों ?

कहानी साहित्य लोकप्रिय साहित्य है और संख्याबहुल साहित्य भी है। इसलिए साहित्यिक दृष्टि से कहानी विधा का अपना महत्त्व है। नारी - चित्रण के बारे में प्राचीन काल से लिखा जा रहा है। काल के अनुरूप लेखन और अभिव्यक्ति में परिवर्तन आते रहते हैं। वर्तमान के संदर्भ में इस परिवर्तन को जानने परखने का प्रयास इन कहानियों में किया है। इसलिए कहानी विधा का चुनाव किया है।

पत्रिका ही क्यों ?

कहानी के लेखन और प्रकाशन काल में अंतर आ सकता है। पत्रिकाओं में प्रकाशित कहानियाँ युगीन समस्या की तत्कालीक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त करती हैं, जो अधिक सार्थक और वर्तमान से जुड़ी हो सकती हैं।

"सारिका" ही क्यों ?

"सारिका" हिन्दी की एक लोकप्रिय पत्रिका है। पिछले कई सालों से कहानी को लेकर "सारिका" ने जो स्थान बनाया है विशेषत: नयी कहानी के बदलते रूप और उसके विभिन्न प्रयोग जो "सारिका" ने किए हैं उससे "सारिका"

का अपना एक अलग अध्ययन हो सकता है। इसलिए "सारिका" को ही चुना गया है ।

"सारिका" सन् १९८९ में प्रकाशित कहानियों में नारी - चित्रण - मेरे इस एम्· फिल के विषय में कुलमिलाकर छः अध्याय, अध्याय हैं।

पहले अध्याय में नारी - चित्रण के विविध रूपों की चर्चा की है। संभवत: नारी के जो प्रमुख रूप है [जैसे - माता, बहन, प्रेमिका, पत्नी] उन रूपों का विस्तार से चित्रण किया गया है।

"हिन्दी कहानी में नारी - चित्रण" इस · दूसरे अध्याय में इसे परखने का प्रयास किया गया है कि आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिंदी कहानी के नारी - चित्रण में किस प्रकार बदलाव होते गये ।

१९८९ की "सारिका" में प्रकाशित मौलिक कहानियों में चित्रित नारी-समस्या के विभिन्न रूपोंका विश्लेषण - इस तीसरे अध्याय में किया गया है।

"सारिका" १९८९ में नारी पर लिखी गयी कुलमिलाकर सत्रह कहानियों का विश्लेषण और उन सत्रह कहानियों की आलोचना की है। स्वातंत्र्योत्त

स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में नारी - चित्रण और "सारिका" सन् १९८९ ई· की कहानियों में प्रस्तुत नारी - चित्रण की तुलना - इस चौथे अध्याय में ६० के पूर्व और साठोत्तरी कहानियों में और "सारिका" सन्"१९८९ में चित्रित नारी-चित्रण की विस्तार से तुलना की है।

आलोच्य - काल की कहानियों में नारी चित्रण की विशेषताएँ - इस पाँचवें अध्याय में हर कहानी की नवीनता और इसकी विशेषताओं का संक्षिप्त में चित्रण किया गया है।

उपसंहार - इस छटे अध्याय में आलोच्य - काल की हर कहानी को चित्रित करने में लेखकों का उद्देश्य और उनकी दृष्टि - व्यापकता का चित्रण किया गया है।

इन छः अध्यायों में विभाजित इस प्रबंधिका के द्वारा जीवन के एक महत्त्वपूर्ण अंग - नारी - से संबंधित बिलकुल अद्यतन दृष्टिकोण को परखने का यह पहला और नितांत मौलिक प्रयास है।

** आ भा र :-

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पूरा करने में मुझे जिन व्यक्तियों ने सहायता और प्रेरणा दी उन व्यक्तियों का मैं आभार मानती हूँ ।

डॉ · सु · गो · गोकाक्कर जिन्होंने मुझे यह प्रबंध लिखने में निर्देशन और प्रेरणा दे दी पहले मैं उनका आभार मानती हूँ।

इसके साथ ही शिवराज कॉलेज, गडहिंग्लज लायब्ररी विभाग, राजाराम कॉलेज, कोल्हापुर, लायब्ररी विभाग, और शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर, लायब्ररी विभाग आदि का भी मैं आभार मानती हूँ । जिन्होने मुझे आवश्यकता के अनुसार सहायता दे दी ।

इसके साथ ही इस शोध - प्रबंध को ठीक वक्त पर टाईप करके मुझे सहयोग दिया उस टंकलेखक का भी मैं आभार मानती हूँ।

00000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000000

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY, KOLHAPUR

** अनुक्रमणिका **

		पृ.क्र.
१.	नारी के विविध रूप	१
२.	हिन्दी कहानी में नारी - चित्रण	११
३.	१९८९ की "सारिका" में प्रकाशित मौलिक कहानियों में नारी - समस्या के विभिन्न रूपों का विश्लेषण	२३
४.	स्वातंत्र्योत्तर कहानियों में नारी - चित्रण और "सारिका" सन् १९८९ ई. की कहानियों में प्रस्तुत नारी - चित्रण की तुलना	७३
५.	आलोच्य - काल की कहानियों में नारी - चित्रण की विशेषताएँ	१०९
६.	उपसंहार	१२२
७.	संदर्भ - ग्रंथ - सूची	१२६

****